1757 से 1947 के बीच उपनिवेशवाद से साम्राज्यवाद की व्यवस्था औपनिवेशिक व्यवस्था कहलाती है। इस काल में पहले कंपनी सरकार और बाद में क्राउन (ब्रिटिश तंत्र) अपने प्रशासनिक तन्त्रों के द्वारा भारत के आर्थिक संसाधनों का शोषण यूरोप के उद्योग व विभिन्न सामाजिक वर्गों के हितों के पूर्ति हेतु करता है अतः औपनिवेशिक व्यवस्था एक ऐसी आर्थिक प्रक्रिया से जुड़ा है जो साम्राज्यवादी अर्थव्यवस्था और भारतीय अर्थ० के बीच आर्थिक सम्बन्धों को स्थापित करता है, ऐसा आर्थिक सम्बन्ध जिसका भारत हेतु अभी तक आर्थिक संसाधनों का दोहन है तो ब्रि० हेतु अभी दूरस्थ पूँजी का संकेन्द्रण है। अर्थात् एक ही प्रक्रिया भारतीय संदर्भ में अल्प विकास के विकास को जन्म देता है वही दूसरी तरफ मेट्रोपोलिस में (साम्राज्यवादी देश०) पूँजी निर्माण व औद्योगिकरण एवं आधुनिकीकरण को जन्म देता है। पहली प्रक्रिया उपनिवेशवाद है और दूसरी प्रक्रिया साम्राज्यवाद। इस

शब्दों में, साम्राज्यवाद एवं उपनिवेश-वाद एक दूसरे के पूरक हैं। इस तरह उपनिवेशवाद उस प्रक्रिया के कारण भारत में अल्प-विकास के विकास को जन्म देता है वहीं साम्राज्य-वाद का अर्थ उसी प्रक्रिया में इंग्लैंड का विकास या आधुनिकीकरण है